शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

दलितों और यहूदियों का तुलनात्मक अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

नानकचन्द, (शोधार्थी), *डा. के.पी.सिंह*
इतिहास और सभ्यता विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नोएडा उ.प्र.

शोध संक्षेप

भारतीय दलितों और यूरोपियन यहूदियों की समाज में दशा अत्यन्त दयनीय थी। भारत में दलित, जातिवाद की समस्या ग्रस्त थे और यूरोप में यहूदी नस्ल की समस्या से। भारतीय समाज में दलितों को सामाजिक, राजनैतिक, धर्मिक और सांस्कृतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे, उसी तरह यूरोप में यहूदियों को भी सामाजिक, राजनैतिक, धर्मिक और सांस्कृतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। यह सर्वविदित है कि अपने मानवाधिकार को प्राप्त करने में संघर्ष दोनों समुदायों ने किया है, लेकिन दलितों की अपेक्षा यहूदी अधिक सफल हैं। डा. अम्बेडकर ने दलित समाज में चेतना जाग्रत करने के लिए शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित रहो का संदेश दिया, लेकिन दलित इस मूल मंत्र को आत्मसात करने में नाकामयाब दिखाई पडते है और यहूदी कामयाब। इस शोध पत्र के द्वारा यह प्रकाश डालने का प्रयास किया जायेगा कि दलित और यहूदी की समाज में क्या स्थिति थी ? दलितों और यहूदियों की प्रताडनाओं में क्या समानताएं थी ? क्या कारण है कि यहूदी, दलितों की अपेक्षा अधिक सफल है ?

प्रस्तावना

दलितों की तुलना यहूदियों से करने का प्रयास आश्चर्यचकित कर सकता है, उनको जो यहूदी इतिहास से अनभिज्ञ है, क्योंकि कोई दो समुदाय एक दूसरे से इतने भिन्न नज़र नहीं आते, जितने यहूदी और दलित। दलित बड़े पैमाने पर अपने मानवाधिकारों से वंचित, कुपोषित, प्रताडित, निर्धन और अशिक्षित है। उनके विपरीत यहूदी आज संसार के सबसे शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से सबसे संपंन लोग है, लेकिन अगर व्यक्ति यहूदी इतिहास से परिचित है, जो गाथा हैं, दो हज़ार सालों की प्रताड़नाओं की, तो उसे यह विषय केवल रोचक ही नहीं दलितों के लिए बड़ा प्रासंगिक भी लगेगा। दलित भारत में हज़ारों सालों से प्रताड़ना के शिकार हैं। उसी प्रकार यूरोप में यहूदी भी दो हज़ारों सालों से प्रताड़ना के शिकार रहे। अपने अधिकारों के लिए और समाज़ में समानता प्राप्त करने के लिए संघर्ष दोनों समुदायों ने किया है, लेकिन दोनों समुदायों में समानताएँ उनकी हुई प्रताड़ना और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष तक ही सीमित है। दोनो के संघर्ष के परिणाम बहुत ही भिन्न है। यहूदियों के प्रति द्वेष की भावना और उस द्वेष से प्रेरित यहूदियों के विरूद्व घटनाओं का क्रम समाप्त नहीं हुआ है, लेकिन निसंदेह बहुत ही कम हो गया है। दलित और यहूदी जिन प्रताड़नाओं से हज़ारों सालों तक ग्रसित रहें उनमें तो समानताएँ हैं परंतु उन्होने अपने अधिकारों के लिए जो संघर्ष किए उनमें अवश्य असमानताएँ हैं और उन्हीं दोनों समुदायों के संघर्षो के इसी अंतर के कारण होलोकास्ट नामक महानरसंहार से गुजरने के बावजूद यहूदी आज दुनिया के सबसे शिक्षित

और सम्पन्न नजर आते हैं। दलित विभिन्न हत्याकांड़ो से पीड़ित रहे परंतु किसी महानरसंहार के शिकार नहीं हुए, मगर इसके बावजूद दलित संवैधनिक स्तर पर तो अपने संघर्ष के परिणामस्वरुप अपने मानव और नागरिक अधिकार प्राप्त करने में तो सफल रहे, मगर उनकी सामाजिक स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई है। निसंदेह दलित अश्वेतों के संघर्ष की तुलना में यहूदियों के संघर्ष के अध्ययन से कहीं अधिक लाभाविन्त हो सकते हैं। आदमी को आदमी न समझना यह विड़म्बना तो सदियों से चली आ रही हैं, आदमी इतिहास तो लिखता हैं लेकिन इससे कुछ सीखता नहीं है और ऐसे ही अमानवीय अत्याचारों और क्रूर त्रासदियों से इतिहास अभिलिप्त हैं। आदमी के द्वारा आदमी को बंदी बनाया जाना, दास बनाया जाना, स्त्रियों के साथ बलात्कार करना, बस्तियों को जला देना, पूरी नस्ल को समाप्त कर देना, चंगेज खाँ और नादिरशाह द्वारा किया गया कत्लेआम, खैरलांजी हत्याकांड़, मिर्चपुर हत्याकांड़, बथानी टोला हत्याकांड़ भारत विभाजन आदि ये सभी घटनाएँ बौना साबित नज़र आती हैं जब हम बात करते हैं होलोकास्ट की। होलोकास्ट मानव के चेहरे पर वो पुती हुई कालिख हैं जिसे कभी समाप्त नहीं किया जा सकता। होलोकास्ट के दौरान दूसरे वर्ग समलैंगिक, जिप्सी, मजदूर और मार्क्सवादी भी पीड़ित थे और यह सर्वविदित हैं कि जिप्सी भारत के दलित हैं जो घूमते-घूमते जर्मनी खानाबदोश के रुप में चले गये थे लेकिन यहाँ पर मेरे शोध पत्र की सर्वप्रथम प्राथमिकता है दलितों और यहूदियों की समाज में सामाजिक समानताओं पर प्रकाश ड़ालना। क्या दलित और यहूदियों की समाज में शोषण और उत्पीडन की समस्याओं में समानताए हैं या नहीं ? यहूदियों और दलितों के अपने-अपने अधिकारों के प्रति संघर्षो का तुलनात्मक अध्ययन दोनो के संघर्षों के बीच समानताओं और असमानताओं को समझने का प्रयास। दलितों के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रुप में यहूदी संघर्ष का अध्ययन। क्या कारण हैं कि दलित बुद्धीजीवियों ने यहूदियों के संघर्ष का प्रेरणा स्रोत के तौर पर अध्ययन करने का कभी प्रयास नहीं किया ? यहूदी बड़े पैमाने पर अपने संघर्ष में सफल रहे हैं। वे आज दुनिया के सबसे शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से सबसे सम्पन्न लोग हैं, उनकी यह कामयाबी आश्चर्यचकित करती है, यह देखते हुए कि अठारह शताब्दियों तक उन्हें विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी और ज़्यादातर पेशों में उनकी भागीदारी पर प्रतिबंध था। यहूदियों की तुलना में दलित अपने संघर्ष में बड़े पैमाने पर असफ्रल रहें हैं। वो आज भी प्रताड़ना के शिकार हैं जबकि संवैधनिक तौर पर और सरकारी स्तर पर उनके संघर्ष के परिणामस्वरुप उनके उत्थान के लिए बहुत सी योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं। यह शोध विवेचना होगी दलितों और यहूदियों की प्रताड़नाओं में समानताओं की, उन दोनों के संघर्ष की समानताओं और असमानताओं की ओर प्रयास होगा यह समझने का कि क्यां यहूदी अपने संघर्ष के परिणामस्वरुप अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में कामयाब रहें बावजूद इसके कि उन्हें होलोकॉस्ट जैसे नरसंहार से भी गुज़रना पड़ा। यह कोशिश होगी जानने कि क्यों दलित इतने वर्षों के पश्चात् भी अपने ही देश में प्रताड़ना के शिकार हैं। क्यों उनका संघर्ष यहूदियों के संघर्ष की तुलना में असफल रहा ? हालाँकि उन्हें

होलोकॉस्ट जैसे नरसंहार से नहीं गुजरना पड़ा। प्रत्येक दिन 3 दलित महिलाओं के साथ बलात्कार की घटनाओं को अंजाम दिया जाता हैं, हर सप्ताह में 5 दलितों के घर जलाये जाते हैं, 6 का अपहरण होता हैं, 11 दलितों की पिटाई की जाती हैं, हर सप्ताह में 13 दलितों की हत्याएँ की जाती हैं। कुल मिलाकर हर 18वें मिनट में दलितों को शोषित और प्रताड़ित किया जाता हैं। (***NCRB Report*** 2011) लेकिन यूरोप में यहूदियों के साथ दलितों की तुलना में बहुत कम घटनाएँ ही घटित होती हैं। यहूदी आज जिन स्थानों पर भी बसे हुए हैं वहाँ उनकी स्थिति बहुत ही उत्तम हैं। ऐसा कोई नहीं होगा जो यूरोप में हुए यहूदियों के नरसंहार के बारे में नहीं जानता होगा। भारत में दलितों की तरह यूरोप में रोमनों और एशिया में अरबों ने दो हज़ार वर्षो तक यहूदियों का सामाजिक, आर्थिक, धर्मिक और शैक्षणिक हर तरीके से उत्पीड़न और शोषण किया और उनके बाद 6 वर्षो तक नाज़ियों ने 60 लाख यहूदियों का नरसंहार किया। यहूदियों को भी शहरों, गाँवों और नगरों की सीमाओ से बाहर रहने के लिए विवश किया। भारत में दलितों के ऊपर असंख्य पेशों को अपनाने पर प्रतिबंध् लगाया गया। भारत में दलितों की स्थिति समाज़ में सबसे निचले पायदान पर थी और यूरोप में यहूदियों की भी स्थिति समाज़ में सबसे निचले पायदान पर थी।

भारत में दलितों को विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, ठीक उसी तरह यूरोप में भी यहूदियों को विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा से वंचित किया गया। यूरोप में यहूदी समाज़ में अपनी माँग और सुझाव नहीं रख सकते थे क्योंकि समाज़ में इन्हें अपनी बात रखने के अधिकार प्राप्त नहीं थे। ठीक उसी तरह भारत में दलितों को भी समाज़ में अपनी बात रखने के अधिकार प्राप्त नहीं थे। यूरोप में यहूदी राजनैतिक कार्यो में भाग नहीं ले सकते थे। यूरोप में यहूदी गैर यहूदियों के साथ एक साथ यात्रा नहीं कर सकते थे ठीक उसी तरह भारत में भी दलित गैर दलितों के साथ एक साथ यात्रा नहीं कर सकते थे। दोनों समुदायों की समस्या एक जैसी थी लेकिन अंतर था इस बात का कि दलितों को हत्याकांडों से गुजरना पड़ा और यहूदियों को 60 लाख जैसे बड़े नरसंहार से गुजरना पड़ा। डॉ अम्बेड़कर ने दलितों के लिए नारा बुलंद किया और संदेश दिया कि शिक्षित बनों, संघर्ष करों और संगठित रहों। ये नारा तो उन्होंने दलितों के लिए दिया था लेकिन जब हम विश्व इतिहास पर नज़र ड़ालते है तो ये पाते है कि जिस समुदाय में ये वास्तव में किया वह दलित नहीं बल्कि यहूदी है और ये बात सर्वविदित है कि इसी जादुई मंत्र के कारण आज़ यहूदी हर क्षेत्र में शीर्ष पर बैठे है जबकि वे भी उसी प्रकार हज़ारों सालों तक प्रताड़नाओं के शिकार रहें जिस प्रकार दलित भारत में रहें। भलें ही डॉ अम्बेड़कर का यह संदेश यहूदियों तक न पहुँचा हो मगर यहूदियों ने बहरहाल किया यहीं, ओर भले ही यह संदेश दलितों को दिया गया हो मगर सच यहीं हैं कि दलित इसको अपनाने में पूरी तरह कामयाब नहीं रहे।

दलित और यहूदी जिन प्रताड़नाओं से हज़ारों सालों तक ग्रस्त रहें उनमें तो समानताएँ हैं परंतु उन्होने अपने अधिकारों के लिए जो संघर्ष किए उनमें अवश्य असमानताएँ हैं और उन्ही दोनों समुदायों के संघर्षो के इसी अंतर के कारण

होलोकास्ट नामक महानरसंहार से गुजरने के बावजूद यहूदी आज दुनिया के सबसे शिक्षित और सम्पन्न लोग नजर आते हैं दलित विभिन्न हत्याकांड़ो से पीड़ित रहे परंतु किसी महानरसंहार के शिकार नहीं हुए, मगर इसके बावजूद दलित संवैधनिक स्तर पर तो अपने संघर्ष परिणामस्वरुप अपने मानव और नागरिक अधिकार प्राप्त करने में तो सफल रहें, मगर उनकी सामाजिक स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई है। निस्संदेह दलित अश्वेतों के संघर्ष की तुलना में यहूदियों के संघर्ष के अध्ययन से कहीं अधिक लाभाविन्त हो सकते हैं।**1**

भारत में दलितों और यूरोप में यहूदियों की प्रताड़नाओं में समानताएँ और असमानताएँ

भारत में दलितों का शोषण, उत्पीड़न, कुचलन और दलहन सदियों से होता चला आ रहा हैं। इतिहास साक्षी है कि कभी दास के रुप में, कभी चांड़ाल के रुप में, कभी शूद्र के रुप में, कभी अछूत के रुप में, कभी अस्पृश्य के रुप में, कभी हरिज़न के रुप में, कभी अत्यंज के रुप में और कभी दलित के रुप में इन कमजोर और असहाय वर्ग का शोषण करने के लिए हर वर्ग जिम्मेदार हैं और आज भी जातिवाद और मनुवाद की महामारी के कारण दलित समाज हाशिये पर हैं। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश हैं लेकिन आजादी के 65 वर्ष बाद भी इस लोकतान्त्रिक देश में आज भी दलितों के साथ खुलेआम अत्याचार किये जाते है और पूरी दलित बस्तियों को आग के हवाले कर दिया जाता हैं वहीं रोमनों, अरबों और नाजियों ने भी यहूदियों का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धर्मिक और शैक्षणिक हर तरीके से उत्पीड़न किया और उन पर अमानवीय और दर्दनाक अत्याचार किये। नाजियों ने जर्मनी में 60 लाख यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया जिनमें से 15 लाख निर्दोष बच्चे भी शामिल थे वहीं भारत में दलितों के साथ हत्याकांड़ तो हुए हैं लेकिन इतना बड़ा नरसंहार कभी नहीं हुआ।

भारत में दलितों को शहरों, नगरों और गांवों की सीमाओं के बाहर रहने के लिए विवश किया वहीं यूरोप में यहूदियों को भी शहरों, गांवों और नगरो की सीमाओं के बाहर रहने के लिए विवश किया गया। भारत में दलितों को स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रतिबंध् लगा दिया गया और यूरोप में यहूदियों को भी शिक्षा से वंचित किया गया। भारत में दलितों को सार्वजनिक संसाध्नों के उपयोग से भी वंचित कर दिया था और यूरोप में यहूदियों को भी सार्वजनिक संसाध्नों को उपयोग करने के अध्किार प्राप्त नहीं थे। भारत में दलित गैर दलितों के साथ बसों और यातायात के साध्नों में यात्रा नहीं कर सकते थे वहीं यरोप में यहूदी भी गैर यहूदियों के साथ यात्रा नहीं कर सकते थे। दलितों को सरकारी नौकरियों में उच्च पदों से वंचित रखा गया और वहीं यहूदियों को भी इन्हीं कुचक्रों का सामना करना पड़ा। दलित और यहूदी जिन प्रताड़नाओं से हज़ारों सालों तक ग्रसित रहें उनमें तो समानताएँ हैं परंतु उन्होने अपने अध्किारों के लिए जो संघर्ष किए उनमें अवश्य असमानताएँ हैं और उन्हीं दोनों समुदायों के संघर्षो के इसी अंतर के कारण होलोकास्ट नामक महानरसंहार से गुजरने के बावजूद यहूदी आज दुनिया के सबसे शिक्षित और सम्पन्न लोग नजर आते हैं दलित विभिन्न हत्याकांड़ो से पीड़ित रहे परंतु किसी महानरसंहार के शिकार नहीं हुए, मगर इसके बावजूद दलित संवैधनिक

स्तर पर तो अपने संघर्ष परिणामस्वरुप अपने मानव और नागरिक अध्किार प्राप्त करने में तो सफल रहें, मगर उनकी सामाजिक स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई है। निसंदेह दलित अश्वेतों के संघर्ष की तुलना में यहूदियों के संघर्ष के अध्ययन से कहीं अध्कि लाभाविन्त हो सकते हैं।**1**

भारत में लगभग 10 करोड़ अछूत है, जिनमें से अधिकाँश प्रत्येक वर्ष चार से पाँच सौ के बीच कट्टर हिंदू और मनुवादियों द्वारा दलितों की हत्या कर दी जाती हैं और प्रत्येक दिन हज़ारों दलितों को बेरहमी से प्रताड़ित किया जाता है, कुछ दलितों के घर जलाये दिये जाते हैं। कुछ दलित महिलाओं के साथ बलात्कार भी किये जाते हैं और कुछ दलितों कम घरों के सामानों को लूट लिया जाता है और वहीं जर्मनी में नाज़ियों द्वारा 60 लाख यहूदियों का नरसंहार किया गया। **2** डा. अंबेडकर बताते है कि जर्मनी में यहूदियों की हालत भारत में दलितों की तुलना की अपेक्षा बेहतर थी। उस समय यहूदियों की दशा एक मृत पशु के समान थी क्योंकि हिटलर के आदेश पर नाज़ियों ने जर्मनी में 60 लाख यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया था जिसमें 15 लाख बच्चे भी शामिल थे। डा. अंबेड़कर बताते हैं कि यहूदियों की प्रताड़नाएँ दलितों की प्रताड़नाओं के सामने कुछ भी नहीं हैं दलितों का कभी चांड़ाल, हरिज़न, दास, अछूत और अस्पृश्य के रुप मंे कुपोषण हुआ लेकिन यहूदियों के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ और यहूदी अपनी कथनी और करनी के खुद जिम्मेदार थे। **3**

यहूदियों पर यह आरोप लगाया जाता हैं कि ईसा की मृत्यु यहूदियों के कारण हुई और मध्य काल के यूरोप के सभी शहरों और गांवों में सीमित क्षेत्र में रहने वाले यहूदियों के निवास को घेट्टों कहते थे। इसाई यहूदियों को ईसा की मृत्यु का जिम्मेदार मानते थे जिसके फलस्वरुप नाज़ियों ने यहूदियों को बर्बरतापूर्वक गाज़र मूली की तरह काट दिया लेकिन भारतीय दलित किसी की हत्या के जिम्मेदार भी नहीं थे, फिर भी दलितों के साथ घिनौने अत्याचार किये और इसके जिम्मेदार हिंदुवादी और ब्राहमणवादी लोग हैं। यहूदियों को भी शिक्षा से वंचित रखा गया ठीक उसी तरह दलितों को भी शिक्षा से वंचित रखा गया। **4** डॉ अंबेड़कर की टिप्पणियों से यह विदित होता है कि जिस तरह रोम में दास, अमेरिका में अश्वेत और जर्मनी में यहूदी थे और हिंदुओं में यही दशा अछूतों की थी, लेकिन इनमें से अछूत सबसे बड़े बदनसीब थे। दास और अश्वेत की भावना आज समाप्त हो गयी है लेकिन भारत में छुआछूत का भूत आज भी मौजूद हैं। अछूतों की दशा को यहूदियों से भी निम्न स्तर की दशा बताया हैं, दलित हिंदुओं की साजिश के शिकार हैं और यहूदी अपनी कथनी और करनी के खुद जिम्मेदार थे लेकिन उनकी सफलता के दरवाजे बंद नहीं थे लेकिन दलित तिरस्कृत ही नहीं हैं, बल्कि तरक्की के सारे दरवाजे बंद हैं लेकिन दलितों की समस्या की तुलना में गुलामों, अश्वेतों और यहूदियों की समस्या कुछ भी नहीं हैं। **5**

अश्वेतों और यहूदियों के संघर्षो का तुलनात्मक अध्ययन

यहूदियों के संघर्ष का अध्ययन और अश्वेतों के संघर्ष का अध्ययन करने से यह विदित होता है कि संघर्ष तो दोनों समुदायों ने किया हैं। अश्वेतों ने मौलिक और मानव अधिकार तो प्राप्त कर लिये है लेकिन आज भी उन्हें समाज में समानता प्राप्त नहीं हो सकी है। विश्व की सम्पूर्ण आबादी

में से यहूदियों की संख्या लगभग डेढ़ करोड़ हैं जिसमें से लगभग 70 यहूदी अमेरिका में रहते हैं, 50 लाख यूरोप में रहते है, शेष अन्य देशों में रहतें है (सुरेश चिपलूनकर)। कहने का तात्पर्य यह है कि इजराइल को छोड़कर सभी देशों में वे अल्पसंख्यक हैं।

यहाँ यह याद रखने योग्य बात है कि कुछ शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों ने दलितों और अश्वेतों के अध्ययन पर तो ध्यान दिया हैं, आखिर किसी भी शिक्षाविद और बुद्धिजीवी ने दलितों और यहूदियों के अध्ययन पर अभी तक ध्यान क्यों नहीं दिया ? प्रश्न यह उठता है क्या दलित यहूदियों के संघर्ष से लाभान्वित हो सकते है जो वे अश्वेतों से नहीं हो सकते ? अल्बर्ट आइंस्टीन, सिगमंड़ फ्रायड़, कार्ल मार्क्स, बेंजामिन रुबिन, जोंस सैक, गरटयूड इलियन, बारुच ब्लूमबर्ग, पाल एल्हरिच, न्यूरो मसकूलर, ग्रेगरी पिंकस, विल्लेम कांफ, इन बुद्धिजीवियों ने सामाजिक, विज्ञान और मैड़िकल के क्षेत्र में अपना योगदान दिया हैं, अपनी बुद्विमत्ता और ज्ञान का। पिछले 105 वर्षो में 129 यहूदियों को नोबेल पुरुस्कार मिल चुके हैं अर्थात् इन आंकड़ों से यह विदित होता हैं कि विश्व में जिस समुदाय की जनसंख्या सिर्फ दशमलव दो (0.2%) प्रतिशत हो उसी समुदाय ने नोबेल पुरस्कारों की लाइन लगा दी हैं। पीटर शुल्टज, बेनों स्ट्रास, एमाइल बर्लिनर, चाल्स गिंसबर्ग, स्टैनली मेज़ोर, राल्फ लारेन, लेविस स्ट्रास, सर्गई ब्रिन, माइकल डेल, लैरी अलिसन, लेविन, हेनरी किसींजर, बेंजामिन डीजरायली आदि इन समुदाय के लोगो ने प्रोधैगिकी, व्यापार , राजनीति और अर्थशास्त्रा के क्षेत्र में भी अपना लोहा मनवा दिया है। विश्वविद्यालयों को दान करने वाले जार्ज सोरास भी यहूदी हैं। ओलिंपक में स्वर्ण पदक विजेता तैराक मार्कस्पज और कम उम्र में जीतने वाले बूम बोरिस बेकार भी यहूदी हैं और ऐसा माना जाता है कि हालीवुड की स्थापना भी यहूदियों द्वारा ही की गई हैं। हरिसन, फोर्ड, माइकल दुगलास, डिस्टन हाफमैन, कैरी ग्राट, पाल न्यूमैन, गोदी हाउन, स्टीवन स्पिल्बर्ग और मेल ब्रूक्स हज़ारों प्रतिभाशाली उच्च पदों पर विराजमान हैं और दलित इन क्षेत्रों में आज भी पीछे हैं, आखिर क्यों? जबकि शोषण और नफरत के शिकार दोनों समुदाय रहे हैं लेकिन यहूदी आज भी विश्व में सबसे सम्पन्न लोग हैं। आखिर दलित यहूदियों से क्या और कैसे सीख सकते हैं और कैसे जो वो अश्वेतों से नहीं सीख सकते। अगर दलित यहूदियों के संघर्ष को मार्गदर्शक ***(Role Model)*** के रुप में अपनाये तो दलित लाभान्वित हो सकते हैं। **6** उपसंहार

निष्कर्ष में उन बातों की ओर संकेत किया गया है कि जिनके कारण यहूदी दलितों की तुलना में कहीं अधिक सफल दिखाई पड़ते हैं, हालाँकि प्रताड़नाओं के शिकार दोनों ही समुदाय रहे हैं हज़ारों सालों तक। इस शोध के माध्यम से वे क्षेत्र और अवसर भी नज़र आयेगे जब-जब दलित यहूदी सहयोग नजर आया हैं जिससे कि आसानी होगी सहयोग के क्षेत्रों को और मजबूत करने में और ऐसे अवसरो की संख्या को बढ़ाने में जिससे दलित समाज जनकल्याण के कार्यो और समरसता बढाने में अपना योगदान दे सकें।

ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

संदर्भ ग्रंथ

1 अंबेड़कर, बाबा साहेब 1995, लेखन और भाषण, खंड़-17, महाराष्ट्र सरकार: मुंबई

2 संघरक्षित 2006, अंबेड़कर और बुद्धिज्म, प्रथम संस्करण, मोती लाल बनारसी दास : दिल्ली

3 कीर, धनञ्जय 1990, डॉ अंबेड़कर का जीवन और उद्देश्य, प्रथम संस्करण, पोपुलर प्रकाशन : दिल्ली

4 अंबेड़कर, बाबा साहेब 1943, मि गांधी और अछूतों के उत्थान, सिद्वार्थ पब्लिशर्स : दिल्ली

5 अंबेड़कर, बाबा साहेब1995, लेखन और भाषण, खंड़-17, महाराष्ट्र सरकार: मुंबई

6 चिपलूनकर, सुरेश, हिंदू और मुस्लिम यहूदियों से क्या सीख सकते है, http://sureshchiplunkar.blogspot.com